Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

हरियाणा का आर्थिक विकास: जिला महेन्द्रगढ़ का एक अध्ययन (1966-2001)

Dr. Neeraj Kumar*

Assistant Lecturer, History Department, Kurukshetra University, Kurukshetra

***शोध-सार** – यह शोध लेख जिला महेन्द्रगढ़ के आर्थिक विकास का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। हरियाणा राज्य के अलग राज्य बनने से पहले महेन्द्रगढ़ एक पिछड़ा हुआ क्षेत्र था। लेकिर हरियाणा बनने के बाद 1966 से लगातार जिला महेन्द्रगढ़ ने आर्थिक प्रगति की। जिसमें आर्थिक विकास के कारकों कृषि, उद्योग, व्यापार एवं यातायात ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। क्योंकि हहित क्रान्ति में आगमन के पश्चात् जिले में नई-नई तकनीक अपनाई गई जिससे कृषि उत्पादन लगातार बढ़ा। कृषि विकास के साथ-साथ जिले में औद्योगिक विकास तीव्र गति से नहीं हुआ। लेकिन फिर भी जिले के हस्तशिल्प उद्योगों से निर्मित नाम हरियाणा के अन्य जिलों में बल्कि राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात थी। इसके अतिरिक्त यातायात के संचार ने जिले के व्यापारीक गतिविधियों को काफी गति प्रदान की। क्योंकि यातायात के माध्यम से गांवों व कस्बों को सड़क व रेलवे के माध्यम से बड़े-बड़े नगरों व महानगरों के साथ जोड़ा गया। जिसके परिणामस्वरूप व्यापार को काफी गति मिली व जिले के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।*

***मुख्य शब्दः** आर्थिक विकास, हरित क्रान्ति, कृषि विज्ञान केन्द्र, पशुधन, हस्तशिल्प उद्योग, यातायात, व्यापार।*

----------X----------

आर्थिक विकास वास्तव में एक ऐसी प्रक्रिया है जो गरीबी व बेरोजगारी के उग्र घेरे को तोड़ते हुए आगे बढ़ता है और उससे देश को एक अवस्था में स्वयं को कायम रखने के विकास का मार्ग मिलता है। यह प्रक्रिया प्रति व्यक्ति आय के स्तर को अच्छा बनाने में सहायता करता है और यह एक संचालन शक्ति है जो अर्थव्यवस्था के ढांचे में शामिल होकर लगातार परिवर्तन करता रहता है।[1]

अर्थशास्त्रीयों ने विकास के स्तर को मापने के लिए मुख्य कारक प्रति व्यक्ति आय को माना है। लेकिन इसके साथ-साथ बिजली की खपत, जनसंख्या का बढ़ता जीवन स्तर, एंचार एवं यातायात का विकास, राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि व उद्योग तथा सहायक व्यवसायों की भागीदारी को आर्थिक विकास के मापने के पैमाने के तौर पर प्रमुख माना गया है।[2]

हरियाणा प्रदेश भारतीय संघ के उत्तरी क्षेत्र में स्थित एक छोटा सा प्रदेश है।[3] यह 1 नवम्बर, 1966 को पंजाब सीमा कमीशन के अंतर्गत अस्तित्व में आया; जो 31 मई, 1966 को प्रस्तुत की गई थी।[4] हरियाणा प्रदेश का विस्तार $27^0$39' से $30^0$55' उत्तरी अक्षांश से लेकर $74^0$28' से $77^0$36' पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। यह उत्तर में हिमाचल प्रदेश, पूर्व में उत्तर-प्रदेश व दिल्ली, दक्षिण से राजस्थान व पश्चिम में पंजाब से घिरा हुआ है।[5]

जिला महेन्द्रगढ़ हरियाणा के दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक छोटा सा जिला है। यह $27^0$48' उत्तरी अक्षांश से $28^0$28' उत्तरी अक्षांश तथा $75^0$26' से $76^0$52' पूर्वी देशान्तर पर स्थित है।[6] 2001 की जनगणना के अनुसार, जिला महेन्द्रगढ़ का क्षेत्रफल 1859 वर्ग कि.मी. में फैला हुआ था जो हरियाणा के कुल क्षेफल का 4.20 प्रतिशत भाग था।[7]

कृषि महेन्द्रगढ़ जिले की अर्थव्यवस्था की मुख्य आधार थी। क्योंकि जिले की 82.30 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती थी। इसलिए यह लोगों के जीवन-यापन का मुख्य साधन थी। क्योंकि जिले की जनसंख्या का 75 से 80 प्रतिशत भाग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर आधारित था।[8]

www.ignited.in

जिला महेन्द्रगढ़ में उगाने वाली फसलों को दो भागों में बांटा जा सकता हैः खरीफ व रबी। खरीफ को स्थानीय भाषा में 'सावनी' तथा रबी को 'साढ़ी' कहा जाता था। यदि कोई भी फसल समय पर नहीं पकती थी इसलिए फसलों के बीच अन्य फसलों की भी बुआई की जाती थी। उन्हें 'जायद' फसलें कहा जाता था।[9] खरीफ फसलों के बाद बोई गई फसल को जायद खरीफ कहा जाता था जैसे सब्जियाँ, तरबूज, मूंग, तम्बाकू व रबी के बाद बोई गई फसलों को जायद रबी कहा जाता था जैसे तोरिया।[10]

खरीफ फसलों में मुख्य रूप से बाजरा, गन्ना, कपास, चावल, मक्का, ज्वार, सोयाबीन, मूंगफल, दालें, सब्जियों की बुआई की जाती थी। इन फसलों में बाजरा क्षेत्र में बाये गऐ क्षेत्रफल के 50 प्रतिशत भाग पर बोया जाता था।[11] रबी फसलों में गेहूं, चना, जौ, सरसों, सब्जियां (शलगम, तम्बाकू, पालक, मेथी) की बुआई की जाती थी। इन फसलों में चना बोये गए क्षेत्रफल का 35 प्रतिशत भाग पर बोया जाता था।[12]

कृषि विकास को बुनियादी तौर पर दो तत्वों पर विश्लेषित किया जा सकता हैः- बाहरी कारक व आन्तरिक कारक।

बाहरी कारक में फसल व्यवस्था एक महत्वपूर्ण कारक है।[13] जिला महेन्द्रगढ़ हरियाणा राज्य की स्थापाना के समय पिछड़ा हुआ जिला था तथा 1966 में केवल 196 हजार हैक्टेयर भूमि पर फसलों का उत्पादन किया जाता था लेकिन बाद में सिंचाई व्यवस्था व उर्वरकों के प्रयोग के कारण 2000-01 में जिले की 365 हजार हैक्टेयर भूमि पर फसलों का उत्पादन किया जाता था।[14]

कृषि उत्पादन को बढ़ाने में आन्तरिक कारकों का भी महत्वपूर्ण योगदान था। जिसमें मुख्य रूपन से सिंचाई, बीज, उर्वरक, कृषि यंत्र शामिल थे।[15]

सिंचाईः

सिंचाई कृषि विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कृषि का होना या ना होना इस बात पर निर्भर करता था कि किसी क्षेत्र में सिंचाई की सुविधाएं कितनी हैं। प्रारम्भ में जिला महेन्द्रगढ़ का अधिकतर हिस्सा वर्षा पर निर्भर था। क्योंकि वर्षा उचित मात्रा में न होने पर जिले में अकाल की स्थिति पैदा हो जाती थी। लेकिन धीरे-धीरे सिंचाई के अन्य साधन जैसे कुऐं, नलकूप, नहरें व बांध विकसित होने पर यह निर्भरता कम हुई थी।[16]

आरम्भ में जिले में 70 से 80 प्रतिशत भूमि कुओं से सिंचित की जाती थी। कुओं से पानी निकालने के लिए विशेष यंत्र का प्रयोग किया जाता था जिसको रहट कहा जाता था। यह रहट बैलों द्वारा खींचा जाता था। इसके अतिरिक्त क्षेत्र में कुऐं से पानी निकालने के लिए देनकली का प्रयोग किया जाता था। जिले में 1966 में पक्के कुओं की संख्या 12345 थी जिनकी संख्या 1980 में इनकी संख्या 17520 थी।[17] लेकिन धीरे-धीरे इनकी संख्या कम होती चली गई। इसका मुख्य कारण हरित क्रान्ति आने से सिंचाई के विभिन्न तरीके अपनाऐ गऐ। सबसे पहले वैज्ञानिक तरीके से नलकूप लगाऐ गऐ ताकि आवश्यकता के समय सिंचाई के लिए सुगमता से पानी उपलब्ध हो सके।[18]

जिले में 1966 के बाद नलकूपों की संख्या बढ़ रही थी। 1966 में जिले में 1221 नलकूप लगे हुए थे जिनकी संख्या 2001 में बढ़कर 20536 हो गई थी।[19]

इसके साथ-साथ जिला महेन्द्रगढ़ के कुछ भागों में नहरों द्वारा भी सिंचाई की जाती थी। लेकिन ये नहरें पूर्णतः वर्षा पर निर्भर थी। इसलिए हरियाणा सरकार ने 1974-75 में सिंचाई की समस्याओं को दूर करने के लिए जवाहर लाल नेहरू लिफ्ट सिंचाई परियोजना शुरू की। जिसका उद्देश्य जिले के सीमान्त क्षेत्रों तक सिंचाई का पानी पहुँचाना था। इस नहर की कुल लम्बाई 1531 कि.मी. थी। जिसमें मुख्य चैनल की लम्बाई 782 कि.मी. थी। इस पूरे नेटवर्क में 68 पम्प हाऊस बनाऐ गऐ थे। जिले में इस परियोजना की लम्बाई 616.27 जिले आपूर्ति के लिए प्रयोग किया जाता था। परन्तु इसमें से 300 क्यूसिक पानी की आपूर्ति के लिए प्रयोग किया जाता था।[20]

नलकूपों व नहरों के अलावा हरियाणा सरकार ने जिले में बाढ़ नियन्त्रण के लिए बांध बनवाऐ थे। जिनमें वर्षा का पानी एकत्रित किया जाता था। जिसका बाद में सिंचाई हेतू प्रयोग किया जाता था। इन बांधों में सबसे महत्वपूर्ण बांध हमीदपुर बांध था। जो दोहन नदी पर तहसील नारनौल के हमीदपूर गांव में 1973 में बनवाया गया था। इस बांध से 49 हैक्टेयर भूमि सिंचित की जाती थी। इसके अतिरिक्त जिले में मसानी बाँध, लूनी बांध, धौलड़ा बांध, सलोनी बांध व बसीरपुर बांध भी मुख्य बांध थे।[21]

इस प्रकार महेन्द्रगढ़ जिले में कुऐं, नलकूप, नहरें सिंचाई के मुख्य साधन थे। 1989 में जिले में सकल सिंचित क्षेत्र सकल कृषि क्षेत्र का 31.13 प्रतिशत था जो बाद में 1999-2000 में बढ़कर 53.2 प्रतिशत हो गया था।[22]

सिंचाई के साथ-साथ कृषि यंत्र, बीज, उर्वरक भी महत्वपूर्ण कृषि विकास के महत्वपूर्ण कारक थे। जिले में किसानों व

www.ignited.in

जमीदारों द्वारा कृषि कार्य करने के लिए परम्परागत कृषि औजारों का प्रयोग किया जैसे - हल, कस्सी, जेली, खुरपा, कुल्हाड़ी का प्रयोग कृषि की बुआई व कटाई के लिए किया जाता था।[23]

लेकिन जब राज्य में हरित क्रान्ति का प्रचार-प्रसार किया जाने लगा तो इसका प्रभाव धीरे-धीरे किसानों पर पड़ा। जिससे जिले के किसानों ने आधुनिक कृषि औजारों का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया था जैसे:- ट्रैक्टर, थ्रैशर, हारवेस्टर, हैरो, कम्बाईन आदि।[24]

महेन्द्रगढ़ जिले में किसानों द्वारा प्रयोग किऐ मुख्य ट्रैक्टर एच.एम.टी., फोर्ड, महिन्द्रा, एस्कार्ट, आयशर, हिन्दुस्तान आदि थे। 1966 में जिले में ट्रैक्टरों की संख्या 73 थी जो 2001 में बढ़कर 4025 हो गई थी।[25]

आधुनिक तकनीक से निर्मित 'थ्रैशर' ने भी कृषि क्षेत्र में क्रान्ति पैदा की। क्योंकि कम समय में अधिक फसल निकालने की सम्भावना पैदा हुई। इसके साथ-साथ किसानों ने 'कल्टीवेटर' की सहायता से जमीन को जोतता था। जिससे किसान अब आसानी व जल्दी से बीज की बुआई कर सकता था। इसके अलावा किसानों द्वारा हैरो का प्रयोग किया जाने लगा था। जिससे किसान जमीन को पहले हैरो की सहायता से जोतता, उसे नरम करता और बाद में बीज की बुआई करती थे। जिससे कृषि क्षेत्र के उत्पादन में बढ़ोतरी होती चली गई।[26]

जिले के किसानों द्वारा आधुनिक कृषि औजारों के प्रयोग करने से कृषि यंत्रों का उत्पादन बढ़ा। 1997-98 में जिले में कृषि यंत्रों का उत्पादन 680 लाख रूपये का था।[27]

अध्ययनकालीन समय में जिले में कृषि उपज कम होने का प्रमुख कारण किसानों द्वारा साधारण बीजों का प्रयोग था। जो ज्यादा उपयोगी नहीं थे। लेकिन जिले के हरित क्रान्ति के अन्तर्गत पैकेज टेक्नोलॉजी' अपनाई गई। जिसके परिणामस्वरूप सरकार ने कम दामों पर अच्छे बीज (एच.वाई.की) उपलब्ध करवाऐं। जैसे:- पी.बी.डब्ल्यू-343, पी.यू.18, पी.आर-17, एस-26, हरियाणा-3, शंकर, उदान आदि। जिससे जिले में कृषि उत्पादन में काफी वृद्धि हुई।[28]

हरियाणा सरकार ने जिले में समय-समय पर कृषि योजनाएं लागू की। जिसमें सबसे पहले 1978 में जिले किसान आयोग का गठन किया गया। इसका उद्देश्य किसानों को कम से कम ब्याज देकर उनकी ऋण संबंधी समस्याओं को दूर करना था। इसके अतिरिक्त रसतिया कृषि विकास योजना लागू की जिससे जिले में फसलों का उत्पादन 4 प्रतिशत बढ़ा। इसके अतिरिक्त नेशनल फूड सिक्योरिटीमिशन नीति के अन्तर्गत जिले में गेहूँ का उत्पादन 1999-2000 में 48.5 प्रति हेक्टेयर था जो बाद में बढ़कर 2004-05 में 64 प्रति हेक्टेयर हो गया था। इसके अलावा 'इन्टग्रेटिड स्कीम ऑफ़ ऑयल सीडस पल्सिज ऑयल पॉम एण्ड मैत्री' कृषि नीति लागू की गई। जिसका उद्देश्य जिले में तिलहन व दालों के उत्पादन को बढ़ाना था।[29]

हरियाणा सरकार के अलावा जिले में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना की गई। जिसका मुख्य उद्देश्य किसानों को कृषि संबंधति नई-नई जानकारियां उपलब्ध करवाना तथा साथ-साथ पशुपालन संबंधी जानकारी देना था। जिससे भी जिले के कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी हुई।[30]

आन्तरिक व बाहरी कारकों, हरियाणा सरकार व किसानों के प्रयासों से तथा साथ-साथ हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से जिले में कृषि उत्पादन में लगातार बढ़ोतरी हुई। 1966 में जिले का कृषि उत्पादन 2.80 लाख टन था जो 2001 में बढ़कर (64.25 लाख टन) हो गया था।[31]

पशुपालन कृषि अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण उप क्षेत्र था। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए अति आवश्यक था। क्योंकि पशुपालन विशेष रूप से छोटे सीमांत किसानों तथा भूमिहीन श्रमिकों को लाभकारी रोजगार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था। कृषक इनकी सहाता से अपने खेतों को जोतता था और इन्हीं से दूध प्राप्त करते थे। किसान पशुओं को बेच कर अपने काम में वृद्धि करता था।[32]

जिला महेन्द्रगढ़ में गाय, बैल, भैंस, बकरी, ऊँट, भेड़ आदि पशुओं की नस्लें पाली जाती थी।[33] जिले में 1977 में पशुधन की संख्या चार लाख अठतीस हजार नौ सो थी जिसकी संख्या 1999 में घटकर चार लाख अठतीस हजार सात सौ थी।[34] मैंने अपने अध्ययन में पाया कि पशुधन में गिरावट मुख्य रूप से आधुनिक तकनीक के विकसित होने से हुई थी। क्योंकि पहले पशुओं को दूध, व्यापार, हल जोतने के लिए पाला जाता था। लेकिन आधुनिक तकनीक आने से किसान खेत जोतने के लिए बैल तथा ऊँट की बजाए ट्रैक्टर प्रयोग होने लगा था। जिससे जिले में ऊँट, बैल की संख्या घट रही थी। अब पशुओं को केवल दूध तथा व्यापार के लिए पाला जाता था जिसमें गाय, भैंस व बकरी प्रमुख थे।[35]

हरियाणा सरकार में पशु सम्पदा के नियन्त्रण व निर्देशन के लिए उचित चिकित्सा व्यवस्था, कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र, चारा व पशु आहार केन्द्रों की स्थापना थी। पशुओं के लिए जिले में

www.ignited.in

पशु स्वास्थ्य केन्द्र की 4 प्रयोगशालाएं तथा एक वीर्य बैंक नारनौल संचालित करते थे। जो गांवों में जाकर पशुओं को संक्रामक रोगों के बचाव के लिए टीका लगाते थे।[36]

इसके अतिरिक्त डेयरी डैवल्पमैन्ट कॉर्पोरेशन द्वारा डेयरी विकास हरियाणा में महेन्द्रगढ़ जिले में नारनौल व जाटूसाणा के 'दी मिल्क चिलींग सैन्टर' भी स्थापित किये। जिला में 'दी मिल्क चिलींग सैन्टर' नारनौल 1977 में स्थापित किया गया। जिसकी क्षमता 1000 लीटर दूध प्रतिदिन था। यह केन्द्र किसानों से दूध इकट्ठा करता था तथा दूध आस-पास के जिलों भिवानी, रोहतक, फरीदाबाद भेज दिया जाता था। इस प्रोजेक्ट में 70 लाख खर्च हुआ था। जिसमें 'सुक्खा अर्धोमुख क्षेत्र योजना' के अन्तर्गत इस चिलिंग सैन्टर को सब्सिडी के तौर पर 5 लाख रूपये दिऐ गऐ थे।[37]

महेन्द्रगढ़ जिले में पशु मेलों का भी आयोजन किया जाता था। जिसमें किसान अपने पशुओं का क्रय-विक्रय किया जाता था। जिले में मुख्य रूप से गदी महापर, कनीना, धरसु, अटेली, नारनौल में पशु मेले लगते थे। जिससे महेन्द्रगढ़ जिले के किसानों के साथ-साथ आस-पास के जिलों जैसे भिवानी, रेवाड़ी, गुड़गांव, फरीदाबाद तथा पंजाब, उत्तर-प्रदेश, राजस्थान, बिहार के किसानों द्वारा भी इन पशु मेलों में पशुओं का क्रय-विक्रय किया जाता था।[38]

जिला महेन्द्रगढ़ कृषि की अपेक्षा औद्योगिक रूप से काफी पिछड़ा हुआ था। जिला औद्योगिक रूप से तीन भागों में विभाजित था:- (1) बड़े व मध्यम उद्योग (2) लघु उद्योग (3) हस्तशिल्प उद्योग।[39]

अध्ययनकालीन समय में आरम्भिक वर्षों में बड़े व मध्यम स्तर के उद्योग कार्यरत थे। जिसमें कृषि आधारित उद्योग, खनिज आधारित उद्योग, तकनीकी आधारित उद्योग मुख्य थे। इन उद्योगों की जिले में कार्यक्षमता दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही थी। इसका मुख्य कारण यह था कि उद्योगों की तरफ ध्यान न देने की कमी तथा सरकार द्वारा सहायता ना करना था।[40]

1966 में जिले में लघु इकाईयों की संख्या 74 थी जिनकी संख्या 1978 में 705 तथा 2001 में बढ़कर 2272 हो गई थी। जिनमें 7175 व्यक्तियों को रोजगार मिला हुआ था।[41]

2001 में जिले में स्थापित औद्योगिक इकाईयों का वर्णन इस प्रकार है:-

आद्योगिक ईकाईयां	संख्या	निवेश (करोड़)	उत्पादन (करोड़ों में)	रोजगार
बड़े व मध्यम इकाईयां	306	6.02	5.63	499
लघु इकाईयां	983	13.83	27.07	3288
पंजीकृत	1289	19.85	32.70	3787

अतः उपरोक्त वर्णन के आधार पर कहा ला सकता है कि जिले में लगातार उद्योगों में निवेश की मात्रा व इनका उत्पादन लगातार गिर रहा था। इसका मुख्य करण यह था जिले में औद्योगिम इकाईयों की बुनियादी जरूरतों का कम होना था जैसे:- कच्चा माल, पूंजी, यातायात, बाजार।

परम्परागत भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि एवं उद्योगों के सामंजस्य पर आधारित रही है। इसी कारण प्रत्येक गांव, नगर, कस्बे में हस्तशिल्प उद्योग अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार थे। बड़े व मध्यम उद्योगों के अभाव में जिले की अर्थव्यवस्था विशेष रूप से हस्तशिल्प उद्योगों पर टिकी हुई थी। हस्तशिल्प उद्योग जिन्हें परिवार उद्योग भी कहा जाता है। जिले के आर्थिक विकास की नींव थे। हरियाणा के अन्य जिले की तरह महेन्द्रगढ़ जिले में भी हस्तशिल्प उद्योगों में मुख्य रूप से लौहार, मोची, बढ़ई, कम्हार तथा जुलाहा कार्यरत थे।[42]

लोहार कृषि के लिए रीढ़ का काम करते थे। क्योंकि ये कृ1षि काम में आने वाले सभी यंत्रों का निर्माण करते थे। बढ़ई लकड़ी से बनने वाली वस्तुओं का निर्माण करते थे। कुम्हार मुख्य रूप से मिट्टी के बर्तन बनाते थे।[43] महेन्द्रगढ़ जिला मुख्य रूप से कपड़े बनाने व रंगने के लिए प्रसिद्ध था। आरम्भ में कपड़ा हाथ से बनाया जाता था। यहाँ विशेष रूप से चादर, दरियां, सूती कम्बल तैयार किये जाते थे। इसके अतिरिक्त जिला कांसे की नली बर्तन बनाने के लिए प्रसिद्ध था। लेकिन रेवाड़ी के अलग जिला बनने पर उद्योग रेवाड़ी में चले गये थे।[44]

हस्तशिल्प उद्योगों को बढ़ावा दे के लिए हरियाणा सरकार ने हरियाणा ग्रामीण उद्योग बोर्ड, चण्डीगढ़ की स्थापना की। बोर्ड ने इन उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए हस्तशिल्प कारीगरों को सब्सिडी की सुविधा उपलब्ध करवाई जिससे जिले में हस्तशिल्प उद्योगों के उत्पादन में लगातार बढ़ोतरी होती चली गई।[45]

हरियाणा सरकार के अन्य जिलों की भांति महेन्द्रगढ़ जिले में उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए समय-समय पर नई-नई औद्योगिक नीतियां लागू की जैसे 1992,1997,1991। इन औद्योगिक नीतियों के माध्यम से जिले में अनेक खण्डों जैसे महेन्द्रगढ़, कनीना, नारनौल, नांगल चैधरी व अटेली

www.ignited.in

जैसे खण्डों का औद्योगिक रूप से समृद्ध बनाने के लिए इन इकाईयों को आकर्षित करने के लिए सब्सिडी की सुविधा उपलब्ध करवाई।[46]

रेवाड़ी में उद्योगों को करने के लिए सरकार ने जिले में वर्क रोड़ योजना लागू की। इसके अतिरिक्त बड़े व लघु उद्योगों को प्रोत्साहन हेतू एक्सपोर्ट, सब्सिडी, मोडर्न इन्वेस्टमैन्ट योजना, जी.एम.ई.जी. ऋण योजना, एस.एस. आई. सब्सिडी, आर.आई.सब्सिडी लागू की गई थी।[47]

हरियाणा सरकार ने कृषि व औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाने के लिए जिले में सहकारी समितियों की स्थापना की। महेन्द्रगढ़ जिले की नारनौल तहसील में 1976 में प्रथम कृषि सहकारी समिति की स्थापना की। इस समिति के द्वारा कृषि ऋण, खाद, बीज, की सुविधा उपलब्ध करवाई जाती थी। साथ-साथ गैर कृषि ऋण की सुविधा भी उपलब्ध करवाई जाती थी। जिले में 1997-98 में 21 औद्योगिक समितियां कार्यरत थी। जो अपने सदस्यों को ईंट, कली, साबुन, दाल तथा साथ-साथ रोजगार भी उपलब्ध करवाती थी। जिले में 2001 तक सहकारी समितियों की संख्या 120 थी।[48]

हरियाणा सरकार ने महेन्द्रगढ़ जिले में प्राथमिक सहकारी भूमि विकास एवं ग्रामीण बैंक की स्थापना 1975 में नारनौल में की थी। जो किसानों को भूमि सुधारों एवं विकास, ट्रैक्टर, पम्पिंग सैट, फवारा सैट, मुर्गी पालन, डेयरी फार्म हाऊस तथा कुऐं आदि बनवाने के लिए ऋण उपलब्ध करवाती थी। सरकार ने जिले में दी महेन्द्रगढ़ सैन्ट्रल कॉपरेटिव बैंक लिमिटिड की स्थापना 1954 में की थी। जो सहकारी समितियों को ऋण देने की सुविधा प्रदान करता था।[49]

किसी भी स्थान या क्षेत्र के विकास में व्यापार का महत्वपूर्ण स्थान होता है। जिला महेन्द्रगढ़ के आर्थिक विकास में भी व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जिले में 1948 में मार्कीट कमेटी की स्थापना की गई थी जो स्टेट मार्कीट बोर्ड, पटियाला के अधीन काम करती थी जो अध्ययनकालीन समय में भी कार्यरत थी।[50]

जिले में व्यापार विशेष रूप से कृषि उत्पादों पर आधारित था। इसलिए सरकार ने कृषि क्षेत्र में व्यापारिक गतिविधियां बढ़ाने के लिए 1961 में पंजाबी एग्रीकल्चरल प्रोडयूस मार्किट कमेटी एक्ट पास किया। इस एक्ट को लागू करने का मुख्य उद्देश्य कृषि उत्पाद को बढ़ाना तथा अनाज को खरीदने व बेचने के लिए मण्डियों की व्यवस्था करना था।[51]

हरियाणा के आधा जिलों की तरह महेन्द्रगढ़ जिले में वस्तुओं का आयात-निर्यात व्यापारिक संघा के द्वारा किया जाता था। इन व्यापारियों को बणियां या आढ़ती कहा जाता था। जिले से सरसों, चना वा बाजरे का निर्यात पंजाब तथा हरियाणा के अन्य जिलों में किया जाता था। खाद्य पदार्थों के साथ-साथ मार्बल, चूना, स्लेट, स्लेटी पत्थर का निर्यात यूरोपीयन देशों व आस्ट्रेलिया में किया जाता था।[52]

जिले में निर्यात के साथ-साथ कुछ वस्तुओं का आयात भी किया जाता था। जिसमें लोहा, लोहे से बनी वस्तुएं जैसे अलमारी, कृषि औजार हिसार व भिवानी जिलों से निर्यात की जाती थी। लाहे के अतिरिक्त खाद्य पदार्थों में चीने (उत्तर प्रदेश), खल (गुजरात व सिरसा), बिनौले, रिफाईंड तेल, डालडा घी (राजस्थान) से आयात की जाती थी।[53]

सड़क तथा रेलवे को किसी भी देश के विकास की शिराएँ कहा जाता है। क्योंकि जिस स्थानों पर सड़कें व रेलवे लाईनें बिछी हुई हैं उन स्थानों का आर्थिक विकास तेजी से होता है। क्योंकि वहाँ औद्योगिक व व्यापारिक विकास तेजी से होता है।[54]

हरियाणा राज्य की स्थापना के बाद महेन्द्रगढ़ जिले में सड़कों के विकास पर अत्यधिक बल दिया गया। 1966 में जिले में पक्की सड़कों की लम्बाई 605 कि.मी. थी जो 1978 में बढ़कर 1296.115 कि.मी. तक पहुँच गई।[55] लेकिन 1 नवम्बर, 1989 को महेन्द्रगढ़ जिले से रेवाड़ी तहसील को दर्जा मिलने के बाद जिले में सड़कों की कुल लम्बाई 932 कि.मी. थी जो 2001 में बढ़कर 951 कि.मी. हो गई। जिसमें पक्की सड़कों की लम्बाई 945 कि.मी. तथा कच्ची सड़कों की लम्बाई 6 कि.मी. थी।[56]

महेन्द्रगढ़ जिले में तीन मुख्य सड़क मार्ग थे। पहला मुख्य राज्य सड़क मार्ग-18 था। जिसकी लम्बाई निजामपुर से आमोदा तक 55 कि.मी. थी। दूसरा मुख्य राज्य सड़क मार्ग-26 था। इस मार्ग की लम्बाई 49.50 कि.मी. थी तथा तीसरा मुख्य राज्य सड़क मार्ग-24 था। जिले में इस राष्ट्रीय सड़क मार्ग की लम्बाई 45 कि.मी. थी।[57]

सड़कों के साथ-साथ जिले में दो मुख्य रेल मार्ग थे। पहला रेलमार्ग रेवाड़ी, नारनौल-फूलेरा रेलमार्ग (पश्चिमी रेलवे) जिले का मुख्य रेलमार्ग था। इसका निर्माण 1904 ई. में किया गया था। इस रेलमार्ग की लम्बाई 48 कि.मी. थी तथा यह मीटर गेज लाईन है। इसका रेलमार्ग रेवाड़ी-सादूलपूर-बीकानेर (उत्तर रेलवे) रेलमार्ग जिले का दूसरा मुख्य रेलमार्ग

www.ignited.in

था। जिले में इस रेलमार्ग की लम्बाई 50 कि.मी. थी तथा यह मीटर गेज लाईन थी।[58]

निष्कर्ष:

अतः उपरोक्त के आधार पर कहा जा सकता है कि हरियाणा राज्य की स्थापना के पश्चात् जिला महेन्द्रगढ़ ने लगातार आर्थिक विकास के चहुंमुखी विकास को छुआ। क्योंकि हरित क्रान्ति के पश्चात् जिले के किसानों को कृषि विकास के लिए उच्च उपज किस्म के बीज, खाद, उर्वरक, कीटनाशक दवाईयों तथा आधुनिक कृषि औजार उपलब्ध करवाऐ। साथ-साथ पशुधन, कृषि विज्ञान केन्द्र, सहकारी समितियों की ऋण सहायता आदि ने भी कृषि उत्पादन में लगातार वृद्धि हुई। लेकिन जिला औद्योगिक विकास में लगातार पिछड़ता चला गया। हरियाणा सरकार के प्रयास ने भी औद्योगिक विकास के लिए अनेक नीतियां व योजनाएं समय-समय पर लागू की। लेकिन फिर भी औद्योगिक इकाईयां लगातार मूलभूत जरूरतों जैसे कच्चा माल, पूंजी, यातायात, बाजार के कारण औद्योगिक इकाईयां लगातार पिछड़ती चली गई। लेकिन व्यापार व यातायात ने जिले के आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया था। क्योंकि यातायात के माध्यम से गांवों व कस्बों को बड़े-बड़े नगरों से जोड़ा गया। जिससे जिले में व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला और जिले के व्यापारियों ने आयात के स्थान पर निर्यात को बढ़ावा दिया जो जिले के आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण कारण साबित हुआ।

सन्दर्भ

1. एम.एल. सिगन, दी इकोनॉमिक्स ऑफ़ डैवलपमैन्ट एण्ड प्लानिंग, पृ. 5
2. श्री नाथ, इकोनॉमिक्स डैवलपमैन्ट एण्ड प्लानिंग इन इण्डिया, पृ. 2-15
3. टैक्नो इकोनॉमिक्स सर्वे ऑफ़ हरियाणा, 1970, नई दिल्ली, पृ. 1
4. दी ट्रिब्यून, 1 नवम्बर, 1966,अम्बाला कैन्ट
5. कृष्ण कुमार खण्डेलवाल, हरियाणा एन्साइक्लोपीडिया, विकास खण्ड, नई दिल्ली, पृ. 17-18
6. जिला महेन्द्रगढ़ गजेटियर, 1988,चण्डीगढ़, पृ. 1
7. सांख्यिकीय सारांश, हरियाणा, 2001, चण्डीगढ़, पृ. 5
8. जिला महेन्द्रगढ़ गजेटियर, 1988,चण्डीगढ़, पृ.47
9. उपरोक्त, पृ. 85
10. कृषि उपनिदेशालय, रिपोर्ट,2007-08, पृ. 5
11. जिला महेन्द्रगढ़ गजेटियर, 1988,चण्डीगढ़, पृ.85-86
12. उपरोक्त, पृ. 86
13. मनदीप सिंह व हरविंद्र कौर, इकोनॉमिक्स डैवलपमैन्ट ऑफ़ हरियाणा, एन ईरा ऑफ़ प्रोस्पर्टी, पृ. 98
14. सांख्यिकीय सारांश, हरियाणा, 2001, चण्डीगढ़, पृ. 227-232
15. डी.सी. गुप्ता, एग्रेरियन डैवल्पमैन्ट इन हरियाणा, नई दिल्ली, 1985, पृ.30
16. सांख्यिकीय सारांश, महेन्द्रगढ़, 2001, चण्डीगढ़, पृ. 58
17. जिला महेन्द्रगढ़ गजेटियर, 1988,चण्डीगढ़, पृ. 91
18. सांख्यिकीय सारांश, महेन्द्रगढ़, 2001, पृ. 178
19. सांख्यिकीय सारांश, हरियाणा, 2001, पृ. 76
20. जिला महेन्द्रगढ़ गजेटियर, 1988, पृ. 91
21. सिंचाई विभाग, रिपोर्ट, नारनौल, पृ. 10-12
22. सांख्यिकीय सारांश, हरियाणा, 2001, पृ. 284
23. जिला महेन्द्रगढ़ गजेटियर, 1988, पृ. 107
24. कृषि उपनिदेशालय, रिपोर्ट, नारनौल, 1980-81, पृ.14
25. सांख्यिकीय सारांश, हरियाणा, 2001, पृ. 137
26. कृषि उपनिदेशालय, रिपोर्ट, महेन्द्रगढ़, 2005-06, पृ.19-21
27. उपरोक्त
27. उपरोक्त

www.ignited.in

29. कृषि हैण्डबुक, हरियाण, 2010-11, पृ. 50

30. कृषि विज्ञान केन्द्र, रिपोर्ट, महेन्द्रगढ़, पृ. 9-10

31. सांख्यिकीय सारांश, हरियाणा, 2001, पृ. 242-43

32. एम.एस. रंधावा, एग्रीकल्चरल एण्ड एनीमल हसबैन्डरी इन इण्डिया, पृ. 259

33. जिला महेन्द्रगढ़ गजेटियर, 1988, पृ. 1130

34. कृषि उपनिदेशालय, रिपोर्ट, नारनौल, 1980-81,पृ. 15-16

35. पशुपालन विभाग, रिपोर्ट, नारनौल, पृ.7-8

36. उपरोक्त

37. जिला महेन्द्रगढ़ गजेटियर, 1988, पृ. 120

38. उपरोक्त, पृ. 120-121

39. उद्योग विभाग, रिपोर्ट, पृ. 15-16

40. उपरोक्त

41. जिला महेन्द्रगढ़ गजेटियर, 1988, पृ. 130, सांख्यकीय हैण्डबुक, महेन्द्रगढ़, 2001, पृ. 283

42. उपरोक्त

43. जिला महेन्द्रगढ़ गजेटियर, 1988, पृ. 136

44. के.सी. यादव, हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति: आदिकाल से 1966 तक, गुड़गांव, 2013, पृ. 321

45. हरियाणा खादी एवं ग्राम उद्योग बोर्ड, रिपोर्ट, नारनौल

46. जिला गुड़गांव गजेटियर, 1910, पृ. 148

47. जिला महेन्द्रगढ़ गजेटियर, 1988, पृ. 140

48. जिला महेन्द्रगढ़ एक परिचय, 2001, पृ. 17-19

49. उद्योग विभाग, रिपोर्ट, नारनौल

50. सहकारी समिति विभाग, रिपोर्ट

51. जिला महेन्द्रगढ़ गजेटियर, 1988, पृ. 345

52. उपरोक्त, पृ. 375

53. पंजाब एग्रीकलचरल प्रोडयूस मार्किट कमेटी एक्ट, 1961, पृ. 2-5

54. मार्किट कमेटी, रिपोर्ट, नारनौल

55. उपरोक्त

56. एल.एन. दास, इन्फ्रास्ट्रक्चर डैवल्पमैन्ट एण्ड दी इण्डियन इकॉनोमी, पृ. 9

57. जिला महेन्द्रगढ़ गजेटियर, 1988, पृ. 376

58. सांख्यिकीय सारांश, हरियाण, 2001, पृ. 435

Corresponding Author

Dr. Neeraj Kumar*

Assistant Lecturer, History Department, Kurukshetra University, Kurukshetra